ख़ज़ाने के अम्बार

KHAZANE KE AMBAAR (HINDI)

www.dawateislami.net

दरिया में घोड़े दौड़ा दिये	1
माले कसीर में कहीं ख़ुफ़्या तदबीर तो नहीं ?	8
गुनाहों को अच्छा समझना कुफ़्र है	10
आफ़ात से नजात का ज़रीआ	22
वीडियो सेन्टर ख़त्म कर दिया	28
माल जम्अ करने न करने की सूरतें	29
अंगूठी के 17 म-दनी फूल	36

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

مکتبۃ المدینہ

(دعوتِ اسلامی)

SC1288

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ***ऐ अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ***! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले*** (المستطرف ج ١ ص ٤٠ دار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

www.dawateislami.net

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

खज़ाने के अम्बार

येह बयान (ख़ज़ाने के अम्बार)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस बयान को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेईल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना
सिलेक्टेड हाउस, अलिफ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाजा,
अह़मद आबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 079-25391168
MO. 9374031409
E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

ख़ज़ाने के अम्बार [1]

शैतान लाख सुस्ती दिलाए येह बयान (39 सफ़हात) मुकम्मल पढ़ लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप को फ़िक्रे आख़िरत की दौलत और दुन्या से बे रग़बती की ने'मत मुयस्सर आएगी।

100 ह़ाजतें पूरी होंगी

सुल्ताने दो[2] जहान, मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमियान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जो मुझ पर **जुमुआ़** के दिन और रात 100 मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़े **अल्लाह** तआ़ला उस की **100 ह़ाजतें** पूरी फ़रमाएगा, **70 आख़िरत** की और **30** दुन्या की और **अल्लाह** तआ़ला एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देगा जो उस **दुरूदे पाक** को मेरी क़ब्र में यूं पहुंचाएगा जैसे तुम्हें तह़ाइफ़ पेश किये जाते हैं, बिला शुबा मेरा इ़ल्म मेरे विसाल के बा'द वैसा ही होगा जैसा मेरी ह़यात में है।"

(جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّيُوطی ج۷ ص۱۹۹ حدیث ۲۲۳۵۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दरिया में घोड़े दौड़ा दिये

अमीरुल मुअमिनीन, ग़ैज़ुल मुनाफ़िक़ीन, इमामुल आ़दिलीन,

[2] : मदीना

1 : येह बयान **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना के अन्दर सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (शबे बराअत सि. 1431 हि./27-7-10) में फ़रमाया। तरमीम व इज़ाफ़े के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है। **मजलिसे मक-त-बतुल मदीना**

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (त-बरानी)

मुतम्मिमुल अर-बईन, ख़ली-फ़तुल मुस्लिमीन ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़ारूक़े आ'ज़म** رضى الله تعالىٰ عنه के दौरे ख़िलाफ़त में ह़ज़रते सय्यिदुना **सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رضى الله تعالىٰ عنه की सिपह सालारी में "जंगे क़ादिसिया" में लश्करे इस्लाम ने शानदार काम्याबी ह़ासिल की, इस जंग में **30 हज़ार मजूसी** या'नी आतश परस्त मौत के घाट उतरे जब कि **8 हज़ार मुसल्मानों** ने जामे शहादत नोश किया। "क़ादिसिया" की अज़ीमुश्शान फ़त्ह़ के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना **सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رضى الله تعالىٰ عنه ने **बाबिल** तक आतश परस्तों का तआ़क़ुब किया और आस पास के सारे अ़लाक़े फ़त्ह़ कर लिये। ईरान का पायए तख़्त (CAPITAL) **मदाइन** जो कि दरियाए दिजला के मशरिक़ी कनारे पर वाक़ेअ़ था, यहां से क़रीब ही था। **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़ारूक़े आ'ज़म** رضى الله تعالىٰ عنه की हिदायत के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना **सा'द** رضى الله تعالىٰ عنه **मदाइन** की त़रफ़ बढ़े, आतश परस्तों ने **दरिया का पुल** तोड़ दिया और तमाम कश्तियां दूसरे कनारे की त़रफ़ ले गए। उस वक़्त दरिया में ख़ौफ़नाक तूफ़ान आया हुवा था और उस को पार करना ब ज़ाहिर ना मुम्किन नज़र आता था, ह़ज़रते सय्यिदुना **सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رضى الله تعالىٰ عنه ने येह कैफ़िय्यत देखी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **का नाम ले कर अपना घोड़ा दरिया में डाल दिया !** दूसरे मुजाहिदीन ने भी आप के पीछे पीछे अपने घोड़े दरिया में उतार दिये गोया :

दश्त तो दश्त हैं दरिया भी न छोड़े हम ने
बह़्रे ज़ुल्मात में दौड़ा दिये घोड़े हम ने

देव आ गए ! देव आ गए !!

दुश्मनों ने जब देखा कि मुजाहिदीने इस्लाम दरियाए दिजला के

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे। (त-बरानी)

फुन्कारते हुए पानी का सीना चीरते हुए मर्दाना वार बढ़े चले आ रहे हैं तो उन के होश उड़ गए और ''دیواں آمدند دیواں آمدند'' (या'नी देव आ गए देव आ गए) कहते हुए सर पर पैर रख कर भाग खड़े हुए। शाहे किस्रा का बेटा **यज़्द गर्द** अपना ह़रम (या'नी घर की औ़रतें) और ख़ज़ाने का एक ह़िस्सा पहले ही ''हुल्वान'' भेज चुका था अब ख़ुद भी **मदाइन** के दरो दीवार पर ह़सरत भरी नज़र डालता हुवा भाग निकला। ह़ज़रते सय्यिदुना **सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رضی اللہ تعالٰی عنہ ''मदाइन'' में दाख़िल हुए तो हर त़रफ़ इ़ब्रत नाक सन्नाटा छाया हुवा था, किस्रा के पुर शिकौह मह़ल्लात, दूसरी बुलन्दो बाला इमारात और सर सब्ज़ो शादाब बाग़ात ज़बाने ह़ाल से दुन्याए दूं (या'नी ह़क़ीर दुन्या) की बे सबाती (या'नी ना पाएदारी) का ए'लान कर रहे थे। येह मन्ज़र देख कर बे इख़्तियार ह़ज़रते सय्यिदुना **सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رضی اللہ تعالٰی عنہ की ज़बाने मुबारक पर पारह 25 **सू-रतुद्दुख़ान** की आयत नम्बर 25 ता 29 जारी हो गईं।

كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّ عُيُوْنٍ ﴿۲۵﴾ وَّ زُرُوْعٍ وَّ مَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿۲۶﴾ وَّ نَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ ﴿۲۷﴾ كَذٰلِكَ وَ اَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿۲۸﴾ فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَ الْاَرْضُ وَ مَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ ﴿۲۹﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : कितने छोड़ गए बाग़ और चश्मे और खेत और उ़म्दा मकानात, और ने'मतें जिन में फ़ारिग़ुल बाल थे, हम ने यूंही किया, और इन का वारिस दूसरी क़ौम को कर दिया, तो उन पर आस्मान और ज़मीन न रोए और उन्हें मोहलत न दी गई।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم **:** जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे । (कन्जुल उम्माल)

सोने का घोड़ा और सोने की ऊंटनी

मदाइन से मुसल्मानों को माले ग़नीमत में करोड़ों दीनार (या'नी करोड़ों सोने के सिक्कों) का **ख़ज़ाने का अम्बार** हाथ आया जिस में निहायत ही नादिरो नायाब चीज़ें थीं, उन में से कुछ के नाम येह हैं **:** ईरान के मशहूर आतश परस्त बादशाह **नौ शेरवां** का ज़र निगार (या'नी सोने का) ताज, शाहाने सलफ़ (या'नी ईरान के गुज़रे हुए बादशाहों के यादगार हीरों) से **जड़ाव ख़न्जर**, ज़िरहें, ख़ौद और तलवारें, **ख़ालिस सोने का क़द आवर घोड़ा** जिस के सीने पर याक़ूत जड़े थे, उस पर सोने का बना हुवा एक सुवार था जिस के सर पर हीरों का ताज था, इसी त़रह़ एक **त़िलाई** (या'नी सोने की) **ऊंटनी** और उस का त़िलाई (या'नी सोने का) सुवार । ऐवाने किस्रा (या'नी ईरान के बादशाहों के शाही मह़ल) का **त़िलाई फ़र्श** या'नी सोने का क़ालीन (CARPET) जो बेश क़ीमत जवाहिरात से आरास्ता था और उस का रक़्बा 60 मुरब्बअ़ गज़ था वग़ैरा वग़ैरा । मुसल्मान माले ग़नीमत जम्अ़ करने में ऐसे दियानत दार साबित हुए कि तारीख़े आ़लम इस की मिसाल पेश करने से क़ासिर है, अगर किसी मुजाहिद को एक मा'मूली सी सूई मिली या क़ीमती हीरा, उस ने बिला तअम्मुल उसे **ख़ज़ाने के अम्बार** में शामिल करवा दिया ।

(البداية والنهاية ج ٥ ص ١٣٥ تا ١٤٠ بتصرف وغيره)

www.dawateislami.net

ख़ज़ाने के अम्बार की पुकार

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने, हमारे अस्लाफ़े किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلام ने बक़ाए इस्लाम के लिये कैसे कैसे जां बाज़ाना

इक़्दाम फ़रमाए ! इस ह़िकायत से ह़ज़रते सय्यिदुना **सा'द बिन अबी वक़्क़ास** رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ की बे मिसाल **करामत** भी सामने आई कि आप رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ ने बे ख़त़र अपना घोड़ा दरियाए दिजला की बिफरी हुई मौजों में डाल दिया ! और येह भी मा'लूम हुवा कि ख़्वाह कितना ही बड़ा **ख़ज़ाने का अम्बार** हो बिल आख़िर बेकार हो कर रह जाता है। अब एक बहुत बड़े ग़फ़्लत शिआ़र इस्राईली मालदार की **इ़ब्रत नाक ह़िकायत** आप के गोश गुज़ार करता हूं, अगर आप का दिल ज़िन्दा हुवा तो इसे सुन कर اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप को ख़ज़ाने के अम्बार बिलकुल बेकार मह़सूस होने लगेंगे चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **412** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**उ़यूनुल ह़िकायात**" हिस्सए अव्वल, सफ़ह़ा **74** पर नक़्ल कर्दा ह़िकायत का ख़ुलासा मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन मैसरह رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं कि पहली उम्मतों में एक मालदार मगर कन्जूस शख़्स था, वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में कुछ भी ख़र्च न करता, हर वक़्त कस्रते धन की धुन (या'नी दौलत की लगन) में मगन रहता और इस की पैहम कोशिश रहती कि बस किसी त़रह़ माल बढ़ता रहे। **उस** ना आ़क़िबत अन्देश, ह़रीसे मालो दौलत की ज़िन्दगी के शबो रोज़ अपने अहलो इ़याल के साथ ख़ूब ऐ़शो इ़शरत और निहायत ग़फ़्लत के साथ बसर हो रहे थे। एक दिन उस के घर के दरवाज़े पर किसी ने दस्तक दी। उस ग़ाफ़िल दौलत मन्द के ग़ुलाम ने दरवाज़ा खोला तो सामने एक फ़क़ीर को पाया, आने का मक़्सद पूछा, जवाब मिला : जाओ और अपने मालिक को बाहर भेजो, मुझे उस से काम है। ग़ुलाम ने झूट बोलते हुए कहा : "वोह तो तेरे ही जैसे किसी फ़क़ीर की मदद करने बाहर गए हैं।" फ़क़ीर

www.dawateislami.net

चला गया। कुछ देर बा'द दोबारा दरवाज़े पर दस्तक पड़ी, गुलाम ने दरवाज़ा खोला तो वोही फ़क़ीर नज़र आया, अब की बार उस ने कहा : जाओ ! अपने आक़ा से कहो, **मैं म-लकुल मौत (عَلَيْهِ السَّلام) हूं ।** उस माल के नशे में धुत और यादे खुदा عَزَّوَجَلَّ से ग़ाफ़िल शख़्स को जब येह पता चला तो **थर्रा** उठा और घबरा कर अपने गुलामों से कहने लगा : "जाओ ! और उन से इन्तिहाई नरमी के साथ पेश आओ ।" गुलाम बाहर आए और **म-लकुल मौत** عَلَيْهِ السَّلام की मिन्नत समाजत करते हुए अ़र्ज़ गुज़ार हुए : "आप हमारे आक़ा के बदले किसी और की रूह़ क़ब्ज़ कर लीजिये और उसे छोड़ दीजिये ।" **आप** عَلَيْهِ السَّلام ने फ़रमाया : "ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता ।" फिर उस मालदार शख़्स से कहा : तुझे जो **वसिय्यत** करनी है अभी कर ले, मैं तेरी रूह़ क़ब्ज़ किये बिग़ैर यहां से नहीं जाऊंगा। येह सुन कर वोह मालदार शख़्स और उस के अहलो इ़याल चीख़ उठे और रोना धोना मचा दिया, उस शख़्स ने अपने घर वालों और गुलामों से कहा : सोने चांदी और ख़ज़ानों के सन्दूक़ खोल कर मेरे सामने ढेर कर दो। फ़ौरन हुक्म की ता'मील हुई और उस के सामने ज़िन्दगी भर के जम्अ़ किये हुए **ख़ज़ाने का अम्बार** लग गया। **ख़ज़ाने के अम्बार** को मुख़ात़ब कर के वोह मालदार शख़्स कहने लगा : "**ऐ ज़लील व बद तरीन मालो दौलत ! तुझ पर ला'नत !** मैं तेरी **महब्बत** की वजह से बरबाद हुवा, हाए ! हाए ! मैं तेरे ही सबब से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत और तय्यारिये आख़िरत से ग़ाफ़िल रहा ।" **ख़ज़ाने के अम्बार** से आवाज़ आई : ऐ मालो दौलत के परस्तार पक्के दुन्या दार और ग़फ़्लत शिआ़र ! मुझे मलामत क्यूं करता है ? क्या तू वोही नहीं जो दुन्या दारों की नज़रों में ज़लीलो ख़्वार था ! फिर मेरी वजह से आबरू दार बना और

www.dawateislami.net

तेरी रसाई शाही दरबार तक हुई, मेरी ही बदौलत तेरा निकाह़ मालदार ख़ानदान में हुवा, यक़ीनन येह तेरी ही बद बख़्ती है कि तू मुझे शैत़ानी कामों में उड़ाता रहा, अगर **तू राहे ख़ुदा में ख़र्च करता** तो येह ज़िल्लतो रुस्वाई तेरा मुक़द्दर न बनती, बता ! क्या बुरे कामों में ख़र्च करने और नेक कामों में सर्फ़ न करने का मश्वरा मैं ने दिया था ? नहीं, हरगिज़ नहीं, तुझे पेश आने वाली तमाम तर तबाही का ज़िम्मेदार तू ख़ुद ही है, (इस के बा'द सय्यिदुना **म-लकुल मौत** عَلَيْهِ السَّلام ने उस कन्जूस मालदार की रूह़ क़ब्ज़ कर ली) । **(عُيُونُ الْحِكَايَات (عَرَبى) ص٤٩ مُلَخَّصًا دار الكتب العلمية بيروت)**

दौलते दुन्या के पीछे तू न जा　　　आख़िरत में माल का है काम क्या ?
*माले दुन्या दो जहां में है वबाल　　　काम आएगा न पेशे **ज़ुल जलाल***

(वसाइले बख़्शिश, स. 375)

www.dawateislami.net

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

......जब चिड़ियां चुग गई खेत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मालो दौलत के दीवाने की क़ाबिले इ़ब्रत **ह़िकायत** समाअ़त फ़रमाई कि ऐसा शख़्स जो उ़म्र भर ऐ़श कोशियों और नफ़्सानी ख़्वाहिशों के पीछे पड़ा रहा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मिली हुई ढील से बजाए संभलने के उस की ग़फ़्लतों का सिल्सिला त़वील होता चला गया, माल के नशे में मख़्मूर, ग़रीबों और मोह़ताजों की इमदाद से दूर और अ़य्याशियों में मसरूर रहा । आख़िरे कार **''एक दिन मरना है आख़िर मौत है''** के मिस्दाक़ मौत का फ़िरिश्ता आ पहुंचा, अगर्चे उस वक़्त माल का ख़ुमार उतरा, होश ठिकाने आए लेकिन **''अब पछताए क्या होत जब चिड़ियां चुग गई खेत ।''** मालो दौलत के ह़रीस अफ़्राद

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह्क़ीक़ वोह बदबख़्त हो गया । (इब्ने सुन्नी)

जिन्हें दुन्या व आख़िरत के बरबाद होने की कोई फ़िक्र नहीं होती उन के लिये इस हिकायत में दर्से इब्रत के बे शुमार **म-दनी फूल** हैं ।

घुप अंधेरी क़ब्र में जब जाएगा — बे अमल ! बे इन्तिहा घबराएगा
काम मालो ज़र वहां न आएगा — ग़ाफ़िल इन्सां याद रख पछताएगा
जब तेरे साथी तुझे छोड़ आएंगे — क़ब्र में कीड़े तुझे खा जाएंगे

(वसाइले बख़्शिश, स. 376)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

माले कसीर में कहीं ख़ुफ़्या तदबीर तो नहीं ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह ह़क़ीक़त है कि बा'ज़ अवक़ात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कस्रते मालो मनाल से नवाज़ कर भी आज़माइश में डाल देता है, जैसा कि **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ **1548** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"फ़ैज़ाने सुन्नत"** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा **682** पर है : सिह़्ह़त की ने'मत और दौलत की कसरत अक्सर मुब्तलाए मा'सिय्यत कर देती है, लिहाज़ा जो (ह़सीन व शानदार या) ख़ूब जानदार या (ज़बर दस्त) मालदार या साहि़बे इक़्तिदार हो उस को ख़ुदाए अ़लीम व ख़बीर عَزَّوَجَلَّ की **ख़ुफ़्या तदबीर** से बहुत ज़ियादा डरने की ज़रूरत है, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "जिस शख़्स पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या में (रोज़ी में ख़ूब कसरत, फ़रमां बरदार औलाद की ने'मत, मालो दौलत, ह़सीन सूरत, अच्छी सिह़्ह़त, मन्सबे वजाहत, ओ़हदए वज़ारत या सदारत या हुकूमत वग़ैरा के ज़रीए) फ़राख़ी करे मगर उसे येह अन्देशा न हो कि कहीं येह (आसाइशें) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर तो नहीं, तो ऐसा शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से ग़ाफ़िल है ।"

(تَنبيهُ الْمُغتَرِّين ص۱۲۸ دارالمعرفة بيروت)

www.dawateislami.net

तो येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ढील है

ख़बरदार ऐ जानदार ! ख़बरदार ऐ शानदार ! ख़बरदार ऐ मालदार ! ख़बरदार ऐ सरमाया दार ! ख़बरदार ऐ साहि़बे इक्तिदार ! ख़बरदार ऐ अफ़्सर व ओ़हदे दार ! रब्बे अ़ज़ीज़ व क़दीर عَزَّوَجَلَّ की **ख़ुफ़्या तदबीर** से ख़बरदार ! ख़बरदार ! ख़बरदार ! कहीं ऐसा न हो कि मिली हुई जानी, माली या हु़कूमती ने'मतों के ज़रीए़ ज़ुल्म, **तकब्बुर**, सरकशी और त़रह़ त़रह़ के गुनाहों का सिल्सिला बढ़ता रहे और कसा-कसाया सुडोल (या'नी ख़ूब सूरत) बदन और माल व धन जहन्नम का ईंधन बनने का सबब बन जाए इस ज़िम्न में ह़दीसे न-बवी علٰی صاحِبِہا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام मअ़ आयते क़ुरआनी सुनिये और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **ख़ुफ़्या तदबीर** से थर्राइये : **ह़ज़रते** सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम, **नूरे मुजस्सम, रसूले मुह़्तशम**, शाहे बनी आदम صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जब तुम देखो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या में गुनाहगार बन्दे को वोह चीज़ें दे रहा है जो उसे पसन्द हैं तो **येह उस की त़रफ़ से ढील है**। फिर येह आयते करीमा तिलावत फ़रमाई :

فَلَمَّا نَسُوۡا مَا ذُكِّرُوۡا بِهٖ فَتَحۡنَا عَلَيۡهِمۡ اَبۡوَابَ كُلِّ شَىۡءٍ ؕ حَتّٰۤى اِذَا فَرِحُوۡا بِمَاۤ اُوۡتُوۡۤا اَخَذۡنٰهُمۡ بَغۡتَةً فَاِذَا هُمۡ مُّبۡلِسُوۡنَ ﴿۴۴﴾

(پ۷، الانعام: آیت ۴۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब उन्हों ने भुला दिया जो नसीह़तें उन को की गई थीं, हम ने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिये यहां तक कि जब ख़ुश हुए उस पर जो उन्हें मिला तो हम ने अचानक उन्हें पकड़ लिया अब वोह आस टूटे रह गए।

(مُسندِ اِمام احمد ج ٦ ص ١٢٢ حدیث ١٧٣١٣ دارالفکر بیروت)

www.dawateislami.net

गुनाहों को अच्छा समझना कुफ़्र है

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحمۃُ الحَنّان इस आयते करीमा के तह़्त "**तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान**" में फ़रमाते हैं : **इस आयते करीमा से मा'लूम हुवा कि गुनाह व मआ़सी के बा वुजूद दुन्यवी राह़तें मिलना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ग़ज़ब और अ़ज़ाब** (भी हो सकता) **है** कि इस से इन्सान और ज़ियादा ग़ाफ़िल हो कर गुनाह पर दिलेर हो जाता है, बल्के कभी ख़याल करता है कि "गुनाह अच्छी चीज़ है वरना मुझे येह ने'मतें न मिलतीं" येह **कुफ़्र** है। (या'नी गुनाह को गुनाह तस्लीम करना फ़र्ज़ है इस को जान बूझ कर अच्छा कहना या अच्छा समझना कुफ़्र है। कुफ़्रिय्या **कलिमात** की तफ़्सीलात जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 692 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब**" का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये) **मज़ीद फ़रमाया :** ने'मत पर ख़ुश होना अगर फ़ख़्र, तकब्बुर और शैख़ी के त़ौर पर हो तो बुरा है और त़रीक़ए कुफ़्फ़ार है और अगर शुक्र के लिये हो तो बेहतर है, त़रीक़ए सालिह़ीन है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

माल के बारे में सुवाल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्या की हर आसाइश में आज़माइश है, क़ियामत के दिन इन आसाइशों (राह़तों) और कशाइशों (या'नी फ़राख़ियों) के **मु-तअ़ल्लिक़** सुवाल होना है। जिस को दुन्या में जितनी ज़ियादा ने'मतें और वसाइल ह़ासिल होंगे, उस को आख़िरत में उसी क़दर मसाइल भी दरपेश होंगे, जब बरोज़े मह़शर **दुन्यवी माल व अस्बाब के बारे में**

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تعالى عليه واله وسلّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (हाकिम)

सुवालात होंगे, माल के ग़लत़ इस्ति'माल पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इताब फ़रमाएगा तो ग़फ़्लत शिआ़र मालदार के सामने येह ह़क़ीक़त खुल कर आ जाएगी कि "**मुझ जैसा दुन्या का अमीर आख़िरत का फ़क़ीर है।**" जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رضى الله تعالى عنه का बयान है कि सरदारे **मक्कए मुकर्रमा**, सुल्त़ाने **मदीनए मुनव्वरह** صَلَّى اللهُ تعالى عليه واله وسلّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**ज़ियादा माल वाले क़ियामत के दिन कम सवाब वाले होंगे**, मगर जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ माल दे और वोह उसे दाएं बाएं और आगे पीछे दे और उस में नेक अ़मल करे।"

(صَحیح بُخاری ج٤ ص٢٣١ حدیث٦٤٤٣)

ने'मतों के बारे में पूछगछ होगी

पारह 30 सू-रतुत्तकासुर की आख़िरी आयत में इर्शादे रब्बे अक्बर عَزَّوَجَلَّ है :

ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ﴿٨﴾ **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान** : फिर बेशक ज़रूर उस दिन तुम से ने'मतों की पुरसिश होगी।

दोज़ख़ के कनारे ने'मतों के मु-तअ़ल्लिक़ सुवालात

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان ने "**तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान**" में इस आयते मुबा-रका के तह़त क़दरे तफ़्सील के साथ कलाम फ़रमाया है, इस में से बा'ज़ बातें अ़र्ज़ करने की कोशिश करता हूं : "मैदाने ह़श्र या दोज़ख़ के कनारे पर तुम से फ़िरिश्ते या ख़ुद रब तआ़ला ने'मतों के **मु-तअ़ल्लिक़** सुवाल फ़रमाएगा और येह सुवाल हर ने'मत के **मु-तअ़ल्लिक़** होगा, जिस्मानी या रूह़ानी, ज़रूरत की हो या ऐ़श व राह़त की, ह़त्ता कि ठन्डे

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है । (त-बरानी)

पानी, दरख़्त के साए, राहत की नींद का भी । मुफ़्ती साहिब मजीद फ़रमाते हैं : बा'दे मौत तीन वक़्त और तीन जगह हिसाब होगा, (1) **क़ब्र** में ईमान का (2) हश्र में ईमान व आ'माल का (3) दोज़ख़ के कनारे ने'मतों के शुक्र का । बिग़ैर इस्तिह़्क़ाक़ जो अ़ता हो वोह **ने'मत** है, रब का हर अ़तिय्या ने'मत है ख़्वाह जिस्मानी हो या रूहानी इस की दो क़िस्में हैं (1) कस्बी (2) वह्बी । **कस्बी** या'नी वोह ने'मतें जो हमारी कमाई से मिलें, जैसे दौलत, सल्तनत वग़ैरा । **वह्बी** या'नी वोह ने'मतें जो मह़्ज़ रब की अ़ता से हों, जैसे हमारे आ'ज़ा, चांद, सूरज वग़ैरा । **कस्बी** (या'नी अपनी कोशिशों से ह़ासिल किये हुए माल या हुनर ऐसी) **ने'मत** के **मु-तअ़ल्लिक़ तीन सुवाल** होंगे, (1) कहां से ह़ासिल कीं ? (2) कहां ख़र्च कीं ? (3) इन का क्या शुक्रिया अदा किया ? **वह्बी** (या'नी बिग़ैर हमारी कोशिश के मिली हुई) **ने'मतों** के **मु-तअ़ल्लिक़ आख़िरी दो[2] सुवाल** होंगे (या'नी कहां ख़र्च कीं ? इन का क्या शुक्रिया अदा किया ?) **तफ़्सीरे ख़ाज़िन, तफ़्सीरे अ़ज़ीज़ी, तफ़्सीरे रूहुल बयान** वग़ैरा में है कि मज़्कूरा आयते करीमा में "**اَلنَّعِيْم**" से नबिय्ये करीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم की ज़ाते वाला सिफ़ात मुराद है, हम से हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم के बारे में सुवाल होगा कि तुम ने इन की इत़ाअ़त की या नहीं ? क्यूं कि हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللهُ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم तो तमाम ने'मतों की अस्ल हैं, आप صَلَّى اللهُ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم की **मह़ब्बत** जिस दिल को रोशन कर दे, उस के लिये तमाम ने'मतें रह़मतें हैं और बद क़िस्मती से जिस के दिल में **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم की **मह़ब्बत** न हो उस के लिये सब

www.dawateislami.net

ने'मतें ज़ह़मतें हैं, **दौलते उ़स्मानी रह़मत** थी, दौलते अबू जह्ल ज़ह़मत।"

सदक़ा प्यारे की ह़या का कि न ले मुझ से ह़िसाब
बख़्श बे पूछे लजाए को लजाना क्या है

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللهُ تعالٰی علٰی محمَّد

क़ियामत में मालदारों के ह़िसाब की लरज़ा ख़ैज़ कैफ़िय्यत

ह़लाल माल जम्अ़ करना बेशक गुनाह नहीं, नीज़ दौलत मन्दी की वजह से किसी मालदार को गुनहगार कहना रवा नहीं। अगर 100 फ़ी सदी ह़लाल माल के सबब कोई मालदार बना और **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلَّم की फ़रमां बरदारी करते हुए उस ने अपना माल ख़र्च किया तो गुनहगार कुजा सवाबे दारैन का ह़क़दार है। लिहाज़ा माल कमाना ही है तो सिर्फ़ व सिर्फ़ ह़लाल त़रीक़े पर कमाना चाहिये। मगर सिर्फ़ ब क़दरे ज़रूरत कमाने ही में आ़फ़िय्यत है, क्यूं कि ह़लाल माल का ह़िसाब होगा और बरोज़े क़ियामत ह़िसाब की किसी में ताब न होगी। **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली علیہ رحمۃ اللہ الوالی **एह़याउल उ़लूम** की तीसरी जिल्द में नक़्ल करते हैं : "क़ियामत के दिन एक शख़्स को लाया जाएगा जिस ने **ह़राम माल कमाया और ह़राम जगह पर ख़र्च किया**, कहा जाएगा : इसे जहन्नम की त़रफ़ ले जाओ और एक दूसरे शख़्स को लाया जाएगा **जिस ने ह़लाल त़रीक़े से माल कमाया और ह़राम जगह पर ख़र्च किया**, कहा जाएगा : इसे भी जहन्नम में ले जाओ, फिर एक तीसरे

शख़्स को लाया जाएगा **जिस ने ह़राम ज़राएअ़ से माल जम्अ़ कर के ह़लाल जगह पर ख़र्च किया,** कहा जाएगा : इसे भी जहन्नम में ले जाओ फिर (चौथे) एक और शख़्स को लाया जाएगा **जिस ने ह़लाल ज़राएअ़ से कमा कर ह़लाल जगह पर ख़र्च किया,** उस से कहा जाएगा : ठहर जाओ ! मुम्किन है तुम ने त़-लबे माल में किसी फ़र्ज़ में कोताही की हो, वक़्त पर नमाज़ न पढ़ी हो, और उस के रुकूअ़ व सुजूद और वुज़ू में कोई कोताही की हो ! वोह कहेगा : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने ह़लाल त़रीक़े पर कमाया और जाइज़ मक़ाम पर ख़र्च किया, और तेरे फ़राइज़ में से कोई फ़र्ज़ भी ज़ाएअ़ नहीं किया। कहा जाएगा : मुम्किन है तूने इस माल में **तकब्बुर** से काम लिया हो, सुवारी या लिबास के ज़रीए़ दूसरों पर **फ़ख़्र** ज़ाहिर किया हो ! वोह अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब ! मैं ने **तकब्बुर** भी नहीं किया और **फ़ख़्र** का इज़्हार भी नहीं किया। कहा जाएगा : मुम्किन है तूने किसी का ह़क़ दबाया हो जिस की अदाएगी का मैं ने हुक्म दिया है कि अपने रिश्तेदारों, यतीमों, मिस्कीनों और मुसाफ़िरों को उन का ह़क़ दो ! वोह कहेगा : ऐ मेरे रब ! मैं ने ऐसा नहीं किया, मैंने ह़लाल त़रीक़े पर कमाया और जाइज़ मक़ाम पर ख़र्च किया और तेरे किसी फ़र्ज़ को तर्क नहीं किया, **तकब्बुर** व गु़रूर भी नहीं किया और किसी का ह़क़ भी ज़ाएअ़ नहीं किया, तूने जिसे देने का हुक्म दिया (मैं ने उसे दिया)।

फिर वोह सब लोग आएंगे और उस से झगड़ा करेंगे, वोह कहेंगे : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तूने इसे माल अ़त़ा किया और मालदार बनाया और इसे हुक्म दिया कि वोह हमें दे और हमारी मदद करे। अब अगर उस ने उन को दिया होगा, और फ़राइज़ में कोताही भी नहीं की होगी, **तकब्बुर** और फ़ख़्र भी नहीं किया होगा फिर भी कहा जाएगा **रुक जा ! मैं ने तुझे जो**

www.dawateislami.net

भी ने'मत इ़नायत की थी, ख़्वाह वोह खाना था, पानी था या कोई सी भी लज़्ज़त, उन सब का शुक्र अदा कर, इसी त़रह़ सुवाल पर सुवाल होता रहेगा।" (اِحیاءُ العُلوم ج٣ ص ٣٣١ دارصادربیروت)

सुवाल उस से होगा जिस ने ह़लाल कमाया होगा

येह रिवायत नक़्ल करने के बा'द सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली علیه رحمة الله الوالی ने जो कुछ फ़रमाया है उस को अपने अन्दाज़ में अ़र्ज़ करने की सअ़्य करता हूं : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** बताइये ! इन सुवालात के जवाबात देने के लिये कौन तय्यार होगा ? सुवालात उस आदमी से होंगे जिस ने ह़लाल त़रीक़े पर कमाया होगा नीज़ तमाम ह़ुक़ूक़ और फ़राइज़ भी कमा ह़क़्क़ुहू (मुकम्मल तौ़र पर) अदा किये होंगे। जब ऐसे शख़्स से येह **ह़िसाब** होगा तो हम जैसे लोगों का क्या ह़ाल होगा जो दुन्यवी फ़ितनों, शुब्हों, नफ़्सानी ख़्वाहिशों, आराइशों और **ज़ीनतों** में डूबे हुए हैं ! इन सुवालात ही के ख़ौफ़ के बाइ़स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे दुन्या और इस के मालो मताअ़ से आलूदा होने से डरते हैं, वोह फ़क़त़ ज़रूरत के मुत़ाबिक़ मुख़्तसर से माले दुन्या पर क़नाअ़त करते हैं और अपने माल से त़रह़ त़रह़ के अच्छे काम करते हैं। **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली علیه رحمة الله الوالی नेक बन्दों के कस्रते माल से बचने की कैफ़िय्यत बयान करने के बा'द आ़म मुसल्मानों को "नेकी की दा'वत" देते हुए फ़रमाते हैं : आप को उन नेक लोगों के त़रीक़े को इख़्तियार करना चाहिये, अगर इस बात को आप इस लिये तस्लीम नहीं करते कि आप अपने ख़याल में

परहेज़ गार और निहायत ही मोह़तात़ हैं और सिर्फ़ ह़लाल माल कमाते हैं और कमाने से मक़्सूद भी मोह़ताजी और सुवाल से बचना और राहे ख़ुदा में ख़र्च करना है और आप का ज़ेह्न येह बना हुवा है कि मैं अपना ह़लाल माल न तो गुनाहों में सर्फ़ करता हूं न ही इस से फ़ुज़ूल ख़र्ची करता हूं नीज़ माल की वजह से मेरा दिल **अल्लाह** عزّوجلّ के पसन्दीदा रास्ते से भी नहीं बदलता और **अल्लाह** عزّوجلّ मेरे किसी ज़ाहिर और पोशीदा अ़मल से नाराज़ भी नहीं है, अगर्चे ऐसा होना **ना मुम्किन** है । बिलफ़र्ज़ ऐसा हो तब भी आप को चाहिये कि सिर्फ़ ज़रूरत के मुताबिक़ माल पर ही राज़ी रहें और मालदारों से अ़लाहि़दगी इख़्तियार करें, **इस का सब से बड़ा फ़ाएदा येह होगा कि जब उन मालदारों को क़ियामत में हि़साब के लिये रोका जाएगा तो आप पहले ही क़ाफ़िले के साथ सरवरे काएनात** صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلّم **के पीछे पीछे आगे बढ़ जाएंगे और आप को हि़साबो किताब और सुवालात के लिये नहीं रोका जाएगा** क्यूं कि हि़साब के बा'द नजात होगी या सख़्ती । हमें येह बात पहुंची है कि नबिय्ये अकरम, **नूरे मुजस्सम**, शाहे बनी आदम, **नबिय्ये मुह़्तशम, शाफ़ेए़ उमम** صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلّم ने फ़रमाया : "फ़ु-क़रा मुहाजिरीन, मालदार मुहाजिरीन से पांच सो साल पहले जन्नत में जाएंगे ।" (ترمذی حدیث ۲۳۵۸)

(ماخوذاً اِحیاءُ العُلوم ج۳ ص۳۳۲)

मुझ को दुन्या की दौलत न ज़र चाहिये
शाहे कौसर की मीठी नज़र चाहिये

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

www.dawateislami.net

माल का इस्ति'माल और उख़रवी वबाल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्यवी ने'मतों और राहतों से मालामाल लोगों को माल के इस्ति'माल के वक़्त ख़बरदार रहना चाहिये कि इस के ग़लत़ इस्ति'माल का अन्जाम उख़रवी वबाल है, यूंही मालो दौलत की बे जा **महब्बत** गुनाहों पर उक्साती, दर बदर फिराती, लूटमार करवाती ह़त्ता कि लाशें गिरवाती है और जब येह दौलत किसी मुहि़ब्बे माल के हाथ से निकलने पर आती है तो बेह़द सताती और ख़ूब तड़पाती और रुलाती है, लिहाज़ा हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن मालो दौलत के मुआ-मले में निहायत ही मोह़तात़ थे। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबुद्दरदा رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ को एक मक्तूब रवाना फ़रमाया जिस में था : ऐ मेरे भाई ! दुन्या से इतना कुछ जम्अ़ न करो कि ह़क़्क़े शुक्र अदा न कर सको, मैं ने अम्बिया के ताजदार, शहन्शाहे अबरार, दो[2] आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم को फ़रमाते सुना है कि बरोज़े क़ियामत एक ऐसे मालदार शख़्स को लाया जाएगा जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की फ़रमां बरदारी में **ज़िन्दगी बसर की होगी**, पुल सिरात़ पार करते हुए उस का माल उस के सामने होगा, जब वोह लड़-खड़ाने लगेगा तो उस का माल कहेगा : "चलते जाओ ! क्यूं कि तुम ने मुझ से **मु-तअ़ल्लिक़ अल्लाह** तआ़ला का ह़क़ अदा कर दिया है।" फिर एक और मालदार को लाया जाएगा, जिस ने दुन्या में अपने माल में से **अल्लाह** तआ़ला का ह़क़ अदा नहीं किया होगा, उस का माल उस के दोनों कन्धों के दरमियान होगा, वोह शख़्स जब पुल सिरात़ पर लड़-खड़ाएगा तो उस का माल उस से कहेगा : तू बरबाद हो ! तूने मुझ से **अल्लाह** तआ़ला

का ह़क़ क्यूं अदा नहीं किया ? पस वोह इसी त़रह़ हलाकत व बरबादी को पुकारता रहेगा। (تاریخ دِمَشق لابن عَساکِر ج۴۷ص۱۵۳دارالفکربیروت)

तेरी त़ाक़त, तेरा फ़न ओ़हदा तेरा   कुछ न काम आएगा सरमाया तेरा
दबदबा दुन्या ही में रह जाएगा   ज़ोर तेरा ख़ाक में मिल जाएगा
जीतने दुन्या सिकन्दर था चला   जब गया दुन्या से ख़ाली हाथ था

(वसाइले बख़्शिश, स. 375, 376)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा रिवायत में इ़ब्रत है उन साहि़बाने सरवत व हैसिय्यत के लिये जो फ़र्ज़ होने के बा वुजूद **ज़कात** देने से कतराते, अपनी दौलत को गुनाहों के कामों में गंवाते, भलाई के कामों में ख़र्च करने से जी चुराते और मोह़ताजों की मदद से जान छुड़ाते हैं। ग़ौर फ़रमा लीजिये कि आज ख़ुशहाल कर देने वाला माल बरोज़े क़ियामत **वबाल** की सूरत इख़्तियार कर गया तो हमारा क्या बनेगा ? काश ! हमारे दिलों से दुन्या व माले दुन्या की बे जा **मह़ब्बत** निकल जाए और हमारी **क़ब्रो** आख़िरत बेहतर हो जाए।

मेरे दिल से दुन्या की उल्फ़त मिटा दे   मुझे अपना आ़शिक़ बना या इलाही !
तू अपनी विलायत की ख़ैरात दे दे   मेरे ग़ौस का वासित़ा या इलाही !

म-दनी इन्आ़मात में अस्लाफ़ की याद

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा रिवायते मुबा-रका से येह भी पता चला कि अपने इस्लामी भाइयों को मक्तूबात के ज़रीए **नेकी की दा'वत** पेश करना सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सुन्नते करीमा है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** दीगर म-दनी ख़ूबियों की ह़ामिल होने के साथ साथ अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की याद भी ताज़ा करती है जैसा कि नेकी की

www.dawateislami.net

दा'वत पर मुश्तमिल **म-दनी मक्तूबात** रवाना करना। इस की तरग़ीब दिलाते हुए **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की त़रफ़ से पेश कर्दा **72 म-दनी इन्आ़मात** में से म-दनी इन्आ़म नम्बर 57 है : {**"क्या आप ने इस हफ़्ते कम अज़ कम एक इस्लामी भाई को मक्तूब रवाना फ़रमाया ?"** (मक्तूब में म-दनी इन्आ़मात और म-दनी क़ाफ़िले की तरग़ीब दिलाएं)} आप से भी म-दनी इल्तिजा है कि "दा'वते इस्लामी" के म-दनी माह़ोल से ता दमे ह़यात मुन्सलिक रहिये, "म-दनी इन्आ़मात" के मुत़ाबिक़ अ़मल की कोशिश कीजिये, اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن के फ़ुयूज़ात और दुन्या व आख़िरत की कसीर ब-रकात ह़ासिल होंगी और कसरते दौलत की हवस के बजाए नेकियों की कसरत की ह़िर्स बढ़ेगी।

www.dawateislami.net

दे जज़्बा "म-दनी इन्आ़मात" का तू — करम बहरे शहे कर्बो बला हो
करम हो दा'वते इस्लामी पर येह — शरीक इस में हर इक छोटा बड़ा हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 91)

اٰمِين بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

धन कमाने की धुन

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज हमारे मुआ़-शरे में अक्सर लोगों के ज़ेह्नों पर दौलतों और **ख़ज़ानों के अम्बार** जम्अ़ करने की धुन सुवार है और इस राहे पुर ख़ार में ख़्वाह कितनी ही तकालीफ़ से दो चार होना पड़े, परवाह नहीं, बस ! हर वक़्त दौलते दुन्या जम्अ़ करने की ह़िर्स है, अगर कभी आख़िरत की भलाई के लिये नेकियों की दौलत इकट्ठी

करने की त़रफ़ **तवज्जोह** दिलाई भी जाए तो मुला-ज़मत या कारोबारी मसरूफ़िय्यत वग़ैरा के बहाने आड़े आ जाते हैं, बाल बच्चों का दुन्यवी मुस्तक़्बिल संवारने की कोशिशों में अपना उख़्रवी मुस्तक़्बिल भूल जाते हैं, औलाद की दुन्यवी पढ़ाई फिर उन की शादी की फ़िक्र किसी और त़रफ़ ज़ेह्न जाने ही नहीं देती। औलाद के दुन्यवी मुस्तक़्बिल की बेहतरी के लिये हमारे बुजु़र्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِين का कैसा म-दनी ज़ेह्न था ! येह भी मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये चुनान्चे

उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की म-दनी सोच

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **415** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"ज़ियाए स-दक़ात"** सफ़ह़ा 83 पर है कि ह़ज़रते सय्यिदुना **मस्लमह बिन अ़ब्दुल मलिक** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَلِك ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़** رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की ज़ाहिरी ह़यात के आख़िरी लम्ह़ात में ह़ाज़िर हुए और कहा : ऐ अमीरुल मुअमिनीन رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ! आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه भी बे मिसाल ज़िन्दगी गुज़ार कर दुन्या से तशरीफ़ ले जा रहे हैं, आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के **13** बच्चे हैं लेकिन विरासत में उन के लिये कोई माल व अस्बाब नहीं छोड़ा ! येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने इर्शाद फ़रमाया : मैं ने अपनी औलाद का ह़क़ रोका नहीं और दूसरों का इन को दिया नहीं और मेरी औलाद की दो ह़ालतें हैं अगर वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त करेंगे तो वोह उन को किफ़ायत फ़रमाएगा क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नेक लोगों को किफ़ायत फ़रमाता है और अगर मेरी औलाद ना फ़रमान हुई तो मुझे इस बात की परवाह नहीं कि मेरे

बा'द माली ए'तिबार से उन की ज़िन्दगी कैसे गुज़रेगी ।

(اِحیاءُ العُلوم ج ۳ ص ۲۸۸)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।*

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यहां येह याद रहे कि अगर किसी के पास माल है तो उसे येही हुक्म है कि स-दक़ा करने के बजाए औलाद की ज़रूरत के लिये रख छोड़े ।

मेरे ग़ौस का वसीला, रहे शाद सब क़बीला
इन्हें खुल्द में बसाना, म-दनी मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश, स. 160)

www.dawateislami.net

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

आज़माइश में काम्याबी की सूरत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बिला ह़ाजत दुन्यवी मालो दौलत जम्अ़ करने का जज़्बा क़ाबिले ता'रीफ़ नहीं और जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ब कसरत दुन्यवी दौलत इनायत फ़रमाई हो उस के लिये काम्याबी की सूरत येही है कि वोह उस को **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की इत़ाअ़त के मुत़ाबिक़ ख़र्च कर के नेकियों की दौलत में इज़ाफ़ा करे चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **417** सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल मुन्फ़रिद किताब **"लुबाबुल एह़्या"** सफ़्ह़ा **258** पर है : **ह़ज़रते** सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام ने इर्शाद फ़रमाया : "दुन्या को **आक़ा** न बनाओ वरना वोह तुम्हें **ग़ुलाम**

बना लेगी, अपना माल उस ज़ात के पास जम्अ़ करो जिस के पास से ज़ाएअ़ नहीं होता क्यूं कि जिस के पास दुन्या का ख़ज़ाना हो उसे (चोरी होने या छिन जाने वग़ैरा की) आफ़त का डर होता है, लेकिन (स-दक़ा व ख़ैरात कर के) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास अपना माल जम्अ़ कराने वाले को किसी क़िस्म का ख़त़रा नहीं होता।"

(لُبابُ الاِحیاء(عربی)ص ۲۳۱ماخوذاً دارالبیروتی دمشق)

*तेरे ग़म में काश **अ़त्तार,** रहे हर घड़ी गरिफ़्तार*
ग़मे माल से बचाना, म-दनी मदीने वाले

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

आफ़ात से नजात का ज़रीआ़

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अभी आप ने मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि ख़ालिक़े काएनात, **अल्लाहु रब्बुल अ़र्ज़े वस्समावात** عَزَّوَجَلَّ की राह में स-दक़ा व ख़ैरात करना बेह़द फ़ाएदे का सौदा है और इस से माल मह़फ़ूज़ हो जाता है। यक़ीनन स-दक़ा व ख़ैरात आफ़ात से नजात का ज़रीआ़ है, लिहाज़ा हर एक को चाहिये कि अपने माल से ह़स्बे तौफ़ीक़ व वुस्अ़त स-दक़ा व ख़ैरात करने की सआ़दत ह़ासिल करते रहिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ बहुत सारी आफ़तों और मुसीबतों से ह़िफ़ाज़त होगी। चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** का मत़्बूआ़ रिसाला "**राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल**" में आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ एक रिवायत नक़्ल करते हैं :

اَلصَّدَقَۃُ تَمْنَعُ سَبْعِیْنَ نَوْعًا مِّنْ اَنْوَاعِ الْبَلَاءِ اَھْوَنُھَا الْجُذَامُ وَالْبَرَصُ

या'नी स-दक़ा 70 क़िस्म की बलाओं को रोकता है जिन में आसान तर बला बदन बिगड़ना (कोढ़) और सफ़ेद दाग़ हैं ।"

(تاریخ بغداد ج۸ ص۲۰٤ دار الکتب العلمیة بیروت)

लुक़्मे के बदले लुक़्मा

سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! स-दक़ा वाक़ेई बलाओं को दफ़्अ़ करता है । इस ज़िम्न में एक ईमान अफ़रोज़ **ह़िकायत** समाअ़त फ़रमाइये चुनान्चे **ह़ज़रते** सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन अस्अ़द याफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى "**रौज़ुर्रियाह़ीन**" में नक़्ल फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये एक औ़रत ने किसी मोह़ताज (या'नी मिस्कीन) को खाना दिया और फिर अपने शोहर को खाना पहुंचाने खेत की त़रफ़ चल पड़ी, उस के साथ उस का बच्चा भी था, रास्ते में एक दरिन्दे (या'नी फाड़ खाने वाले जानवर) ने बच्चे पर ह़म्ला कर दिया, वोह दरिन्दा बच्चे को निगलना ही चाहता था कि ना गहां (या'नी अचानक) ग़ैब से एक हाथ ज़ाहिर हुवा जिस ने उस दरिन्दे को एक ज़ोरदार ज़र्ब लगाई और बच्चे को छुड़ा लिया, फिर ग़ैब से आवाज़ आई : "ऐ नेक बख़्त ! अपने बच्चे को सलामती के साथ ले जा ! **हम ने लुक़्मे के बदले तुझे लुक़्मा अ़त़ा कर दिया ।**" (या'नी तूने ग़रीब को खाने का लुक़्मा खिलाया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरे बच्चे को दरिन्दे का लुक़्मा बनने से बचा लिया) । (رَوْضُ الرِّیاحِین ص ۲۷٤)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रहे ह़क़ में सभी दौलत लुटा दूं
ख़ुदा ! ऐसा मुझे जज़्बा अ़त़ा हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 91)

www.dawateislami.net

शैत़ान का ग़ुलाम कौन ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिसे माले दुन्या मिलने के साथ साथ राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने का जज़्बा भी मिल गया वोह तो सआ़दत मन्द ठहरा लेकिन जो ग़फ़्लत में डालने वाली दुन्यवी आसाइशों में मुन्हमिक रहा और नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी की, उस ने गोया शैत़ान की ग़ुलामी इख़्तियार की जैसा कि **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली علیہ رحمۃ اللہ الوالی **एह़याउल उ़लूम** में नक़्ल करते हैं : जब सब से पहले दिरहम व दीनार तय्यार हुए तो शैत़ान ने उन को उठा कर अपनी पेशानी पर रखा फिर उन को चूमा और बोला : जिस ने तुम से **मह़ब्बत** की ह़क़ीक़त में वोह मेरा **ग़ुलाम** है । (اِحیاءُ العُلوم ج ۳ص۲۸۸)

www.dawateislami.net

......वोह ज़लीलो ख़्वार हो

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ المُبِین दुन्यवी मालो दौलत और इस की फ़िक्र से आज़ाद और **तवक्कुल** व क़नाअ़त की दौलत से मालामाल थे, दुन्यवी मुस्तक़्बिल से बढ़ कर उख़रवी मुस्तक़्बिल की फ़िक्र में मगन रहने वाले सआ़दत मन्द थे, वोह इस ह़क़ीक़त से अच्छी त़रह़ वाक़िफ़ थे कि दौलत की **मह़ब्बत** बाइ़से रुस्वाई व ज़िल्लत है, जैसा कि मशहूर व मक़्बूल **वलिय्युल्लाह** ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शिबली علیہ رحمۃ اللہ الولی का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है : **जिस ने दौलते दुन्या के साथ प्यार किया वोह ज़लीलो ख़्वार हुवा ।** (رَوضُ الرَّیاحِین ص ۱۳۹ دارالکتب العلمیۃ بیروت)

मेरा दिल पाक हो सरकार दुन्या की ***मह़ब्बत*** *से*
मुझे हो जाए नफ़रत काश ! आक़ा मालो दौलत से

(वसाइले बख़्शिश, स. 133)

मह़ब्बते मालो दौलत की तबाह कारियां

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई मालो दौलत की **मह़ब्बत** इन्सान को ख़्वारी व ज़िल्लत के अ़मीक़ (या'नी गहरे) गढ़े में धकेल देती है, अगर्चे बा'ज़ अवक़ात इन्सान दुन्या में थोड़ी बहुत इ़ज़्ज़त व शोहरत ह़ासिल कर भी लेता है मगर अक्सर उख़रवी तबाही व बरबादी उस का मुक़द्दर बन जाती है । दौलत के नशे में मस्त रहने वालों के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना **शैख़ शिबली** عليه رحمة الله الولى के बयान कर्दा इर्शाद में इ़ब्रत ही इ़ब्रत है । मालो दौलत की **मह़ब्बत** में अन्धा होने वाला अन्जामे आख़िरत से बिलकुल ग़ाफ़िल हो कर अह़कामे शरीअ़त को पसे पुश्त डाल देता है फिर उसे हुक्मे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की परवाह रहती है, न ही इर्शादे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم का पास । यक़ीनन फ़िक्रे मालो दौलत फ़िक्रे आख़िरत से ग़फ़्लत में डालती और बे शुमार गुनाहों का सबब बनती है जिन में से चन्द येह हैं : तर्के ज़कात व उ़श्र, सूद व रिश्वत का लैन दैन, बुख़्ल की नुहूसत, क़त्ए़ रेह़्मी (या'नी रिश्तेदारी तोड़ना), झूट और नाह़क़ दूसरों का माल दबा लेना वग़ैरा ।

www.dawateislami.net

माल की दीनी व दुन्यवी आफ़ात

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ **853** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल"** जिल्द **1** सफ़ह़ा **565** ता **567** पर शैख़ुल इस्लाम, शहाबुद्दीन इमाम अह़मद बिन **ह़जर** मक्की शाफ़ेई عليه رحمة الله القوى ने मालो दौलत की आफ़ात तफ़्सीलन बयान फ़रमाई हैं, उन में से चन्द का ज़िक्र करता हूं :

दीनी आफ़ात

मालो दौलत की कसरत इन्सान को गुनाहों पर उभारती और पहले मुबाह़ (या'नी जाइज़) लज़्ज़ात की त़रफ़ ले जाती है ह़त्ता कि वोह उन का इस क़दर आ़दी हो जाता है कि उस के लिये उन्हें छोड़ना इन्तिहाई मुश्किल हो जाता है यहां तक कि अगर वोह ह़लाल कमाई के ज़रीए़ उन्हें ह़ासिल न कर सके तो बसा अवक़ात **ह़राम काम** करने लगता है, क्यूं कि जिस के पास माल कसरत से हो, उसे लोगों से मेलजोल और तअ़ल्लुक़ात बढ़ाने की भी ज़ियादा ज़रूरत होती है और जो इस चीज़ में मुब्तला हो जाए वोह उ़मूमन लोगों से मुना-फ़क़त से पेश आएगा और उन्हें राज़ी या नाराज़ करने के मुआ़-मले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी का मुर-तकिब होगा तो इस के नतीजे में वोह **अ़दावत, कीना, ह़सद, रियाकारी, तकब्बुर, झूट, ग़ीबत, चुग़ली** वग़ैरा का बाइ़स बनने वाले दीगर कई बड़े बड़े गुनाहों में मुब्तला हो जाएगा।

दुन्यवी आफ़ात

मालदारों को लाह़िक़ होने वाली दुन्यवी आफ़ात में ख़ौफ़ व ग़म, परेशानी, मसाइब का सामना, अमारत (या'नी मालदारी) बर क़रार रखने के लिये हर दम माल कमाना और उस की ह़िफ़ाज़त करना वग़ैरा दीगर कई आफ़ात शामिल हैं।

माल का ग़ुलाम हलाक हो

इमाम इब्ने ह़जर عليه رَحمَةُ اللهِ الاكبر फ़रमाते हैं : माल न तो मुत़्लक़न ख़ैर (या'नी भलाई की चीज़) है न ही मह़ज़ शर (या'नी बुराई की शै) माल बा'ज़ अवक़ात क़ाबिले ता'रीफ़ होता है और कभी क़ाबिले मज़म्मत । लिहाज़ा जिस ने किफ़ायत (ज़रूरत) से ज़ियादा ह़िस्सा ह़ासिल किया गोया ख़ुद को हलाकत पर पेश किया, क्यूं कि त़बीअ़तें हिदायत से रोकने वाली हैं और शहवात व ख़्वाहिशात की त़रफ़ माइल रहती हैं और माल उन में आले का काम देता है । तो ऐसी सूरत में ज़रूरत से ज़ाइद माल में सख़्त ख़त़रात हैं । मज़ीद आगे चल कर आप رحمةُ اللهِ تعالٰى عليه ने ह़दीसे पाक नक़्ल की है कि शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "दिरहम व दीनार का ग़ुलाम हलाक हो।" (سُنَنِ اِبن ماجه ج٤ ص٤٤١ حديث٤١٣٦ دار المعرفة بيروت)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! काश ! हम पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुसूसी रह़मत का नुज़ूल हो कि हम दौलते दुन्या से प्यार करने और इसी सोच बिचार में गुम रहने के बजाए उख़रवी सआ़दतों की त़रफ़ ध्यान देने वाले बन जाएं और येह इस्तिग़ासा (या'नी फ़रियाद) हमारे ह़क़ में द-र-जए क़बूलिय्यत का शरफ़ पा ले :

क़लील रोज़ी पे दो क़नाअ़त फ़ुज़ूल गोई से दे दो नफ़रत
दुरूद पढ़ने की बस हो आ़दत नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत

(वसाइले बख़्शिश, स. 106)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अगर आप सुधरना चाहते हैं तो......

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप से म-दनी इल्तिजा है कि दा'वते इस्लामी का म-दनी माहोल अपना लीजिये कि येह माहोल **ख़ज़ानों का अम्बार** इकठ्ठे करने के बजाए अ-बदी सआदतों का हक़दार बनने का ज़ेहन देता है, लिहाज़ा अगर **आप सुधरना चाहते हैं** तो दिल से दुन्या की बे जा **महब्बत** निकालने, रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ हासिल करने की तड़प क़ल्ब में डालने, सीना सुन्नते मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تعالٰی علیه واٰلہٖ وسلَّم का मदीना बनाने, मालो दौलत को सहीह मस्रफ़ (या'नी ख़र्च की दुरुस्त जगह) में इस्ति'माल करने का इल्म पाने और दिल को फ़िक्रे आख़िरत की आमाज गाह बनाने के लिये तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के **म-दनी माहोल** से हर दम वाबस्ता रहिये, **म-दनी इन्आमात** के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारिये और **सुन्नतों** की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िलों** के मुसाफ़िर बनते रहिये, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ दोनों जहां में बेड़ा पार होगा। आप की तरग़ीब व तहरीस के लिये एक **म-दनी बहार** पेश की जाती है चुनान्चे

वीडियो सेन्टर ख़त्म कर दिया

लांढी (बाबुल मदीना, कराची) के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है : हमारे अलाक़े में एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी **नेकी की दा'वत** को आम करने के अज़ीम जज़्बे के तहत बड़ी मुस्तक़िल मिज़ाजी से **चौक दर्स** दिया करते थे। एक मर्तबा उस चौक दर्स में **एक वीडियो सेन्टर वाले** को भी शिर्कत की सआदत हासिल हो गई। जब मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ने **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स शुरूअ किया तो

ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم से भरपूर, फ़िक्रे आख़िरत से मा'मूर अल्फ़ाज़ तासीर का तीर बन कर "वीडियो सेन्टर वाले" के दिल में पैवस्त हो गए, बा'दे दर्स जब इस्लामी भाइयों ने उन पर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** की दा'वत पेश की तो फ़ौरन राज़ी हो गए। और शिर्कत भी की जिस की ब-र-कत से اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन में तब्दीली आने लगी, कुछ ही अ़र्से में उन्हों ने **वीडियो सेन्टर ख़त्म कर दिया** और धागे का कारोबार शुरूअ़ कर के ह़लाल रोज़ी की त़लब में मश्ग़ूल हो गए।

माले दुन्या है दोनों जहां में वबाल, आप दौलत की कसरत का छोड़ें ख़याल
क़ब्र में काम आएगा हरगिज़ न माल, ह़श्र में ज़र्रे ज़र्रे का होगा सुवाल

www.dawateislami.net

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

माल जम्अ़ करने न करने की सूरतें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! माल जम्अ़ करने न करने की सूरतों के मु-तअ़ल्लिक़ बारगाहे र-ज़विय्यत में होने वाले "सुवाल व जवाब" के मुख़्तलिफ़ इक़्तिबासात पेश करता हूं, اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप की मा'लूमात में बेह़द इज़ाफ़ा होगा **: सुवाल :** एक शख़्स जो अहलो इ़याल (या'नी बाल बच्चे) रखता है अपनी माहाना या सालाना आमदनी से बिला इफ़रात़ व तफ़रीत़ (या'नी बिग़ैर कमी व ज़ियादती के) अपने बाल बच्चों पर ख़र्च कर के बक़ाया ख़ुदा की राह में देता है आइन्दा को अहलो

इ़याल के वासित़े कुछ नहीं रखता, दूसरा अपनी आमदनी से बच्चों पर एक ह़िस्सा ख़र्च कर के दूसरा ह़िस्सा ख़ैरात करता और तीसरा ह़िस्सा आइन्दा उन की ज़रूरतों में काम आने की ग़रज़ से रख छोड़ने को अच्छा जानता है, इन दोनों में अफ़्ज़ल कौन है ?

अल जवाब : ह़ुस्ने निय्यत (या'नी अच्छी निय्यत) से दोनों[2] सूरतें मह़मूद (बहुत ख़ूब) हैं, और **ब इख़्तिलाफ़े** अह़वाल (या'नी ह़ालात मुख़्तलिफ़ होने की वजह से) हर एक (कभी) अफ़्ज़ल, कभी वाजिब, व लिहाज़ा इस बारे में अह़ादीस भी मुख़्तलिफ़ आईं और स-लफ़े सालेह़ (या'नी बुज़ुर्गाने दीन) का अ़मल भी मुख़्तलिफ़ रहा।

اَقُوْلُ وَبِاللّٰهِ التَّوْفِيْق (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तौफ़ीक़ से मैं कहता हूं) इस में क़ौले **मूजज़ व जामेअ़** (या'नी मुख़्तसर व जामेअ़ क़ौल) اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ येह है कि आदमी दो[2] क़िस्म (के) हैं **: (1) मुन्फ़रिद** कि तन्हा हो और (2) **मुई़ल** कि इ़याल (या'नी बाल बच्चे वग़ैरा) रखता हो, सुवाल अगर्चे **मुई़ल** से **मु-तअ़ल्लिक़** है मगर हर **मुई़ल** अपने ह़क़्क़े नफ़्स (या'नी ख़ुद अपने बारे) में **मुन्फ़रिद** और उस पर अपने नफ़्स (या'नी अपनी ज़ात) के लिह़ाज़ से वोही अह़काम हैं जो **मुन्फ़रिद** पर हैं लिहाज़ा दो[2]नों के अह़काम से बह़्स दरकार।

《1》 वोह अहले **इन्क़िताअ़** व **तबत्तुल इलल्लाह अस्ह़ाबे तजरीद व तफ़्रीद** (या'नी ऐसे लोग जिन्हों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ात़िर दुन्या से कनारा कशी इख़्तियार कर ली हो और उन पर अहलो इ़याल की ज़िम्मेदारी न हो या उन के अहलो इ़याल ही न हों) जिन्हों ने अपने रब से कुछ (माल) न रखने का अ़ह्द बांधा (वा'दा किया) उन पर अपने अ़ह्द के सबब तर्के इद्दिख़ार (या'नी माल जम्अ़ न करना) लाज़िम होता है अगर कुछ बचा रखें

www.dawateislami.net

तो नक़्ज़े अ़ह्द (या'नी वा'दा ख़िलाफ़ी) है और बा'दे अ़ह्द फिर जम्अ़ करना ज़रूर ज़ो'फ़े यक़ीन से **नाशी** (या'नी यक़ीन की कमज़ोरी की वजह से है) या उस का **मूहिम** (या'नी वहम डालने वाला) होगा, ऐसे (ह़ज़रात) अगर कुछ भी ज़ख़ीरा करें मुस्तह़िक़्क़े इ़क़ाब (या'नी सज़ा के ह़क़दार) हों ।

﴾2﴿ फ़क़्र व तवक्कुल ज़ाहिर कर के स-दक़ात लेने वाला अगर येह ह़ालत मुस्तमिर (या'नी बर क़रार) रखना चाहे तो उन स-दक़ात में से कुछ जम्अ़ कर रखना उसे **ना जाइज़** होगा कि येह धोका होगा और अब जो स-दक़ा लेगा **ह़राम व ख़बीस** होगा ।

﴾3﴿ जिसे अपनी ह़ालत मा'लूम हो कि ह़ाजत से ज़ाइद जो कुछ बचा कर रखता है नफ़्स उसे तुग़्यान व इ़स्यान (या'नी सरकशी व ना फ़रमानी) पर ह़ामिल होता (या'नी उभारता), या किसी मा'सियत (या'नी ना फ़रमानी) की आ़दत पड़ी है उस में ख़र्च करता है तो उस पर मा'सियत से बचना **फ़र्ज़** है और जब उस का येही त़रीक़ा **मुअ़य्यन** (या'नी मुक़र्रर) हो कि बाक़ी माल अपने पास न रखे तो इस ह़ालत में उस पर ह़ाजत से ज़ाइद सब आमदनी को मसारिफ़े ख़ैर (या'नी भलाई के कामों) में सर्फ़ कर देना लाज़िम होगा ।

﴾4﴿ जो ऐसा बे सब्रा हो कि अगर उसे फ़ाक़ा पहुंचे तो مَعَاذَاللہ रब عَزَّوَجَلَّ की शिकायत करने लगे अगर्चे सिर्फ़ दिल में, न ज़बान से, या तुरुक़े ना जाइज़ा (या'नी ना जाइज़ त़रीक़ों) मिस्ले सरिक़ा (या'नी चोरी) या भीक वग़ैरा का मुर-तकिब हो, उस पर लाज़िम है कि ह़ाजत के क़दर जम्अ़ रखे, अगर पेशावर है कि रोज़ का रोज़ खाता है, तो एक दिन का, और मुलाज़िम है कि माहवार मिलता है या मकानों दुकानों के किराए पर बसर है कि (किराया) महीना पीछे आता है, तो एक महीने का और ज़मीनदार

www.dawateislami.net

है कि फ़स्ल (छ माह) या साल पर पाता है तो छ महीने या साल भर का और अस्ल ज़रीअ़ए मआ़श म–सलन आलाते ह़िरफ़त (या'नी काम के औज़ार) या दुकान मकान देहात ब क़दरे किफ़ायत का बाक़ी रखना तो मुत़्लक़न उस पर लाज़िम है ।

﴾5﴿ जो आ़लिमे दीन **मुफ़्तिये शर–अ़** या **मुदाफ़ेए़ बिद्अ़** (बद मज़्हबिय्यत को रोकने वाला) हो और बैतुल माल से रिज़्क़ नहीं पाता, जैसा (कि अब) यहां है, और वहां उस का ग़ैर (या'नी कोई दूसरा) इन मनासिबे दीनिया (या'नी दीनी मन्सबों) पर क़ियाम न कर सके कि इफ़्ता (फ़तवा देने) या दफ़्ए़ बिदआ़त में अपने अवक़ात का सर्फ़ करना उस पर **फ़र्ज़े ऐ़न** हो और वोह माल व जाएदाद रखता है जिस के बाइ़स उसे ग़ना (माली त़ौर पर मज़बूती) और इन फ़राइज़े दीनिया के लिये फ़ारिग़ुल बाली है (या'नी रोज़गार वग़ैरा से बे फ़िक्री है) कि अगर (सारा ही माल) ख़र्च कर दे मोह़ताजे कस्ब (या'नी काम काज करने का मोह़ताज) हो और इन उमूर (या'नी इन दीनी फ़रीज़ों की अदाएगी) में ख़लल पड़े, उस पर भी अस्ल ज़रीए़ का इब्क़ा (या'नी बाक़ी रखना) और आमदनी का ब क़दरे मज़्कूर जम्अ़ रखना **वाजिब** है ।

﴾6﴿ अगर वहां और भी आ़लिम येह काम कर सकते हों तो इब्क़ा व जम्ए़ मज़्कूर (ह़स्बे ज़रूरत माल जम्अ़ करना और माल के ज़राएअ़ बाक़ी रखना) अगर्चे वाजिब नहीं मगर अहम व मुअक्कद (सख़्त ताकीद किया हुवा) बेशक है कि इ़ल्मे दीन व ह़िमायते दीन के लिये फ़राग़ बाल (या'नी ख़ुशह़ाली), कस्बे माल (या'नी माल कमाने) में इश्तिग़ाल (या'नी मशग़ूल होने) से लाखों द–रजे अफ़्ज़ल है मअ़ हाज़ा (या'नी इसी के साथ) एक से दो[2] और दो[2] से चार[4] भले होते हैं, एक (आ़लिम) की नज़र कभी ख़त़ा

www.dawateislami.net

करे तो दूसरे (उ़-लमा) उसे सवाब (या'नी सह़ीह़ बात) की त़रफ़ फैर देंगे, एक (आ़लिम) को मरज़ वग़ैरा के बाइ़स कुछ उ़ज़्र पेश आए तो जब और (उ़-लमा) मौजूद हैं काम बन्द न रहेगा लिहाज़ा **तअ़द्दुदे** उ़-लमाए दीन (उ-लमाए दीन की कसरत) की त़रफ़ ज़रूर ह़ाजत है ।

《7》 आ़लिम नहीं मगर त़-लबे इ़ल्मे दीन में मश्ग़ूल है और कस्ब में इश्तिग़ाल (माल कमाने में मश्ग़ूल होना) उस (या'नी इ़ल्मे दीन की त़लब) से मानेअ़ (या'नी रोकने वाला) होगा तो उस पर भी उसी त़रह़ इब्क़ा व जम्अ़ मस्तूर आक्द व अहम है । (या'नी उस के लिये भी ह़स्बे ज़रूरत माल जम्अ़ करना और माल के ज़राएअ़ को बाक़ी रखना बहुत अहम व ज़रूरी है)

《8》 तीन सूरतों में जम्अ़ मन्अ़ हुई, दो में वाजिब, दो में **मुअक्कद** (या'नी ताकीदी और) जो इन आठ (क़िस्मों) से ख़ारिज हो, वोह अपनी ह़ालत पर नज़र करे अगर जम्अ़ न रखने में उस का क़ल्ब परेशान हो, तवज्जोह ब इ़बादत व ज़िक्रे इलाही में ख़लल पड़े तो ब मा'निये मज़्कूर ब क़दरे ह़ाजत जम्अ़ रखना ही अफ़्ज़ल है और अक्सर लोग इसी क़िस्म के हैं ।

《9》 अगर जम्अ़ रखने में उस का दिल **मु-तफ़र्रिक़** (या'नी मुन्तशिर) और माल के ह़िफ़्ज़ (या'नी ह़िफ़ाज़त) या उस की त़रफ़ मैलान (झुकाव) से **मु-तअ़ल्लिक़** हो तो जम्अ़ न रखना ही अफ़्ज़ल है कि अस्ल मक़्सूद ज़िक्रे इलाही के लिये फ़राग़ बाल (फ़ारिग़ होना) है जो उस में **मुख़िल** (ख़लल डालने वाला) हो वोही मम्नूअ़ है ।

《10》 जो अस्ह़ाब नुफ़ूसे **मुत़्मइन्नह** (या'नी अहले इत़्मीनान) हों, (कि) न

www.dawateislami.net

अ़-दमे माल (माल न होने) से उन का दिल परेशान (हो) न वुजूदे माल (या'नी माल होने) से उन की नज़र (परेशान हो), वोह मुख़्तार हैं (या'नी बा इख़्तियार हैं कि चाहें तो बक़िय्या माल स-दक़ा व ख़ैरात कर दें या अपने पास ही रखें)।

﴾11﴿ ह़ाजत से ज़ियादा का मसारिफ़े ख़ैर (या'नी अच्छी जगहों) में सर्फ़ (ख़र्च) कर देना और जम्अ़ न रखना सूरते सिवुम में तो वाजिब था बाक़ी जुम्ला सुवर (या'नी दीगर तमाम सूरतों) में ज़रूर मत़लूब (या'नी पसन्दीदा), और जोड़ कर (या'नी जम्अ़) रखना उस के ह़क़ में ना पसन्द व मा'यूब कि **मुन्फ़रिद** को इस का जोड़ना तूले अमल (या'नी लम्बी उम्मीद) या हुब्बे दुन्या (या'नी दुन्या की मह़ब्बत) ही से नाशी (या'नी पैदा) होगा। (मत़लब येह कि माल जम्अ़ करना लम्बी उम्मीद या दुन्या से मह़ब्बत ही की वजह से होगा और येह दोनों सूरतें अच्छी नहीं हैं)

www.dawateislami.net

दुन्या का मुसाफ़िर

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلّم है : "दुन्या में यूं रह गोया तू मुसाफ़िर बल्कि राह चलता है और अपने आप को क़ब्र में समझ कि सुब्ह़ करे तो दिल में येह ख़याल न ला कि शाम होगी और शाम हो तो येह न समझ कि सुब्ह़ होगी।" (سُنَنِ تِرمِذی ج٤ ص١٤٩ حدیث ٢٣٤٠ دارالفکر بیروت)

तुम्हें शर्म नहीं आती

सुल्त़ाने मदीना صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلّم ने एक मौक़अ़ पर इर्शाद फ़रमाया : يَا اَيُّهَا النَّاسُ اَمَا تَسْتَحْيُوْنَ ऐ लोगो ! क्या तुम्हें शर्म नहीं आती ? हाज़िरीन ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** ! किस बात से ? फ़रमाया :

जम्अ़ करते हो जो न खाओगे और इ़मारत बनाते हो तो जिस में न रहोगे और वोह आरज़ूएं बांधते हो जिन तक न पहुंचोगे इस से शरमाते नहीं ।

(اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير لِلطَّبَرانی ج٢٥ص١٧٢حديث٤٢١ داراحياء التراث العربی بيروت)

जब कोई लुक़्मा लेता हूं......

ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رضی اللہ تعالٰی عنہما ने एक महीने के वा'दे पर एक कनीज़ सो दीनार को ख़रीदी, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या उसामा से तअ़ज्जुब नहीं करते जिस ने एक महीने के वा'दे पर (कनीज़) ख़रीदी, बेशक उसामा की उम्मीद लम्बी है, क़सम उस की जिस के हाथ में मेरी जान है ! मैं तो जब आंख खोलता हूं येह गुमान होता है कि पलक झपकने से पहले मौत आ जाएगी और जब पियाला मुंह तक ले जाता हूं कभी येह गुमान नहीं करता कि इस के रखने तक ज़िन्दा रहूंगा और जब कोई लुक़्मा लेता हूं गुमान होता है कि इसे ह़ल्क़ से उतारने न पाऊंगा कि मौत उसे गले में रोक देगी, क़सम उस की जिस के हाथ में मेरी जान है बेशक जिस बात का तुम्हें वा'दा दिया जाता है ज़रूर आने वाली है तुम थका न सकोगे ।

(اَلتَّرغِيب وَالتَّرهِيب ج٤ ص١٠٨ حديث٥١٢٧ دارالفكربيروت)

www.dawateislami.net

येह सब (तो) **मुन्फ़रिद** का बयान (है) रहा इ़याल दार (तो) ज़ाहिर है कि वोह अपने नफ़्स के ह़क़ में "**मुन्फ़रिद**" है, तो ख़ुद अपनी ज़ात के लिये उसे उन्हीं अह़काम का लिह़ाज़ चाहिये और इ़याल की नज़र से उस की सूरतें और हैं उन का बयान करें ।

﴾12﴿ इ़याल की कफ़ालत शर-अ़ ने इस पर फ़र्ज़ की, वोह उन को

तवक्कुल व तबत्तुल (दुन्या से कनारा कशी) **व सब्र अ़लल फ़ाक़ा** (या'नी और भूक प्यास से सब्र) पर मजबूर नहीं कर सकता, अपनी जान को जितना चाहे कुसे (या'नी आज़माइश में डाले) मगर उन (या'नी बाल बच्चों) को ख़ाली छोड़ना इस पर **ह़राम** है ।

《13》 वोह जिस की इ़याल में सूरते चहारुम की त़रह़ बे सब्रा हो और बेशक बहुत अ़वाम ऐसे निकलेंगे तो इस के लिहाज़ से तो इस पर दौहरा वुजूब होगा कि क़दरे ह़ाजत जम्अ़ रखे ।

《14》 हां जिस की सब इ़याल (या'नी बाल बच्चे) साबिर व मु-तवक्किल हों उसे रवा (जाइज़) होगा कि सब (माल) राहे ख़ुदा में ख़र्च कर दे । (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 10, स. 311 ता 327, मुख़्त-सरन)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं । ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صلى الله تعالى عليه واله وسلم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा ।" (ابنِ عساکر ج۹ ص۳۴۳ دارالفکر بیروت)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تعالیٰ علیٰ محمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़फ़िरत है। (जामेअ़ सग़ीर)

"अंगूठी के अहम अह़काम" के सत्तरह हुरूफ़ की निस्बत से अंगूठी के 17 म-दनी फूल

❁ मर्द को **सोने** की अंगूठी पहनना **ह़राम** है। सुल्त़ाने दो[2] जहान, रह़मते आ़-लमियान صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم ने सोने की अंगूठी पहनने से मन्अ़ फ़रमाया। (بُخاری ج ٤ ص٦٧ حدیث٥٨٦٣) ❁ (ना बालिग़) लड़के को सोने का ज़ेवर पहनाना **ह़राम** है और जिस ने पहनाया वोह गुनहगार होगा। (دُرِّمُختار و رَدُّالْمُحتار ج٩ ص٥٩٨) ❁ **लोहे** की अंगूठी जहन्नमियों का ज़ेवर है। (ترمذی ج٣ص٣٠٥ حدیث١٧٩٢) ❁ मर्द के लिये वोही अंगूठी जाइज़ है जो मर्दों की अंगूठी की त़रह़ हो या'नी एक नगीने की हो और अगर उस में (एक से ज़ियादा या) कई नगीने हों तो अगर्चे वोह चांदी ही की हो, मर्द के लिये **ना जाइज़** है। (رَدُّالْمُحتار ج٩ص٥٩٧) ❁ इसी त़रह़ मर्दों के लिये एक से ज़ियादा (जाइज़ वाली) अंगूठी पहनना या (एक या ज़ियादा) छल्ले पहनना भी **ना जाइज़** है कि येह (छल्ला) अंगूठी नहीं। औ़रतें छल्ले पहन सकती हैं। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 71) ❁ चांदी की एक अंगूठी एक नग की, कि वज़्न में साढ़े चार माशे (या'नी चार ग्राम 374 मिली ग्राम) से कम हो, पहनना जाइज़ है अगर्चे बे ह़ाजते मोहर, (मगर) इस का तर्क (या'नी जिस को स्टेम्प की ज़रूरत न हो उस का न पहनना) अफ़्ज़ल है और मोहर की ग़रज़ से ख़ाली जवाज़ नहीं (या'नी जिन को अंगूठी से स्टेम्प लगानी हो उन के लिये सिर्फ़ जाइज़ ही नहीं) बल्कि **सुन्नत** है, हां **तकब्बुर** या ज़नाना पन का सिंगार (या'नी लेडीज़ स्टाइल की

टीपटॉप) या और कोई ग़-रज़े मज़्मूम (या'नी क़ाबिले मज़म्मत मत़लब व मफ़ाद) निय्यत में हो तो एक अंगूठी (ही) क्या इस निय्यत से (तो) अच्छे कपड़े पहनने भी जाइज़ नहीं । (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 141) ۞ ईदैन में मर्द के लिये चांदी की जाइज़ वाली अंगूठी पहनना मुस्तह़ब है । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 779, 780, ब तसर्रुफ़ मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची) ۞ अंगूठी उन्हीं के लिये **सुन्नत** है जिन को मोहर करने (या'नी स्टॅम्प STAMP लगाने) की ह़ाजत होती है, जैसे सुल्त़ान व क़ाज़ी और उ़-लमा जो फ़तवे पर (अंगूठी से) मोहर करते (या'नी स्टॅम्प लगाते) हैं, इन के इ़लावा दूसरों के लिये जिन को मोहर करने की ह़ाजत न हो **सुन्नत** नहीं अलबत्ता पहनना जाइज़ है । (فتاوٰی عالمگیری ج٥ ص٣٣٥)
۞ मर्द को चाहिये कि अंगूठी का नगीना हथेली की त़रफ़ रखे और औ़रत नगीना हाथ की पुश्त की त़रफ़ रखे । (الهداية ج٤ ص٣٦٧) ۞ चांदी का छल्ला ख़ास लिबासे ज़नान (या'नी औ़रतों का पहनावा) है मर्दों को मक्रूह । (या'नी ना जाइज़ व गुनाह है) (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 130)
۞ औ़रत सोने चांदी की जितनी चाहे अंगूठियां और छल्ले पहन सकती है, इस में वज़्न और नगीने की ता'दाद की कोई क़ैद नहीं ۞ लोहे की अंगूठी पर चांदी का ख़ौल चढ़ा दिया कि लोहा बिलकुल न दिखाई देता हो, उस अंगूठी के पहनने की मुमा-न-अ़त नहीं । (आ़लमगीरी, जि. 5, स. 335)
۞ दोनों में से किसी भी एक हाथ में अंगूठी पहन सकते हैं और सब से छोटी उंगली में पहनी जाए । (رَدُّالْمُحتار ج٩ ص٥٩٦، بہارِ شریعت حصّہ ١٦ ص٧٠)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (त-बरानी)

❁ मन्नत का या दम किया हुवा धात (METAL) का कड़ा भी मर्द को पहनना ना जाइज़ व गुनाह है। ❁ **मदीनए मुनव्वरह** زادَھَااللّٰہُ شَرَفًاوَّ تَعظِیْماً या अजमेर शरीफ़ के छल्ले और स्टील की अंगूठी भी जाइज़ नहीं ❁ बवासीर वग़ैरा के लिये दम किये हुए चांदी के छल्ले भी मर्दों के लिये जाइज़ नहीं ❁ अगर आप ने धात का कड़ा या धात का छल्ला, ना जाइज़ अंगूठी, या धात की ज़न्जीर (CHAIN) पहनी है तो अभी अभी उतार कर तौबा कर लीजिये।

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ दो कुतुब (1) **312** सफ़हात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त** हिस्सा **16** और (2) **120** सफ़हात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन हासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो   सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो   ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, ए'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक-त-बतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये।

www.dawateislami.net

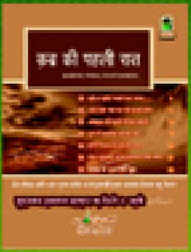

الحمد لله رب العلمين والصلوة والسلام على سيد المرسلين اما بعد فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم بسم الله الرحمن الرحيم

सुन्नत की बहारें

الحمد لله عزوجل तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात को शाहेआलम दरवाज़ा के पास, म-दनी मर्कज़ शाही मस्जिद में इशा की नमाज़ के बा'द होने वाले सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है, आशिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के अपने यहां के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। ان شاء الله عزوجل इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा। हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।'' ان شاء الله عزوجل

अपनी इस्लाह़ के लिये म-दनी इन्आमात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है। ان شاء الله عزوجل

मक-त-बतुल मदीना की शाख़ें

मुम्बई : 19-20 मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफिस के सामने, मुम्बई-3, फ़ोन : (022) 2345 4429

देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली - 6, फ़ोन : (011) 2328 4560

अजमेर : 19-216, फ़लाहे दारैन मस्जिद, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, अजमेर फ़ोन: (0145) 2629385

नागपूर : मुहम्मद अ़ली सराय रोड - जामिअ़तुल मदीना, कमालशाह बाबा दरगाह के पास, मोमिन पुरा, नागपूर - 18, फ़ोन : 0712-2737290

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया

Ph:91-79-25391168 E-mail:maktabahind@gmail.com, www.dawateislami.net

SC1286

PRINTED BY : MAKTABATUL MADINA OFFSET PRINTING PRESS (DAWAT-E-ISLAMI)